

## क. परमेश्वर और मूसा:

### ❖ परमेश्वर से मुलाकात (निर्गमन 33:7-11)

- मूसा ने परमेश्वर से तम्बू में मुलाकात की, जहाँ उसने परमेश्वर से आमने-सामने बात की (निर्गमन 33:7-11)।
- स्पष्टीकरण: "आमने-सामने" अभिव्यक्ति का तात्पर्य यह नहीं था कि उन्होंने एक-दूसरे को शारीरिक रूप से देखा था, बल्कि यह था कि उनके बीच एक प्रवाहपूर्ण संवाद था (हालाँकि मूसा ने कभी भी परमेश्वर का चेहरा नहीं देखा था)।
- परमेश्वर और मूसा के बीच का रिश्ता धीरे-धीरे गहरा होता गया
- मूसा परमेश्वर का एक विश्वासयोग्य सेवक (इब्रानियों 3:5), अंधकार में एक कभी न बुझने वाला प्रकाश स्तम्भ, और एक आदर्श भविष्यद्वक्ता बन गया।

### ❖ परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानना (निर्गमन 33:12-17)

- जब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह लोगों के साथ कनान नहीं जाएगा (निर्गमन 33:1-3), तो एक दिलचस्प बातचीत शुरू हुई (निर्गमन 33:12-17):
  - (1) **परमेश्वर** : तू मेरा मित्र है और तुझ पर मेरा अनुग्रह है।
  - (2) **मूसा** : यदि ऐसा है, तो मुझे अपना मार्ग सिखा, कि मैं तुझे जान सकूँ।
  - (3) **परमेश्वर** : मैं आप तेरे साथ चलूँगा और तुझे विश्राम दूँगा।
  - (4) **मूसा** : यदि तू आप न चले, तो हमें यहाँ से आगे न ले जा।
  - (5) **मूसा** : यदि तू हमारे साथ नहीं चलेगा तो कोई कैसे जान सकेगा कि तू मुझसे प्रसन्न है?
  - (6) **परमेश्वर** : ठीक है, मैं वही करूँगा जो तू कहेगा, क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है और मैं तुझे अपना मित्र मानता हूँ।
- मूसा ने परमेश्वर के साथ 40 दिन बिताए थे, तथा दस आज्ञाएँ और पवित्रस्थान के निर्माण के लिए निर्देश प्राप्त किए थे। अब वह एक बार फिर परमेश्वर के सामने था, लोगों के लिए मध्यस्थता कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह परमेश्वर को बहुत अच्छी तरह जानता था, क्योंकि वह उससे बहुत परिचितता से बात करता था। तो फिर, किस अर्थ में उसे परमेश्वर को जानने की आवश्यकता थी (निर्गमन 33:13)? हमें भी किस अर्थ में परमेश्वर को जानने की आवश्यकता है?

## ख. परमेश्वर की महिमा:

### ❖ परमेश्वर की महिमा जानने की इच्छा (निर्गमन 33:18-23)

- "मूसा ने कहा, "मुझे अपनी महिमा दिखा दे।" (निर्गमन 33:18) + परमेश्वर ने उत्तर दिया: मैं...तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा (निर्गमन 33:19) + परमेश्वर ने उसे जो दिखाया वह उसका चरित्र था (निर्गमन 34:6-7) => परमेश्वर की महिमा उसकी भलाई, अर्थात् उसका चरित्र है।
- इस प्रकार, हमारी "महिमा" हमारे जीवन में परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिम्बित करना है (2 कुरिंथियों 1:12; 3:18)।
- जब हम क्रूस को देखते हैं, तो हमें परमेश्वर की महिमा, उसकी भलाई और उसके चरित्र का सबसे बड़ा प्रकटन दिखाई देता है।

### ❖ परमेश्वर की महिमा का दर्शन (निर्गमन 34:1-28)

- परमेश्वर ने मूसा को अपनी महिमा सातवीं बार सीनै पर्वत पर चढ़ने पर दिखाई।
- परमेश्वर की महिमा का दर्शन परमेश्वर के चरित्र की स्व-घोषणा साबित हुआ (निर्गमन 34:6-7)। परमेश्वर के प्रेम की इस झलक पाकर मूसा ने आराधना की (निर्गमन 34:8; 1 यूहन्ना 4:19)।
- अंततः, परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपनी वाचा की पुष्टि की और बछड़े की घटना को क्षमा कर दिया।

### ❖ परमेश्वर की महिमा देखने का परिणाम (निर्गमन 34:29-35)

- मूसा ने पहले भी कई बार परमेश्वर से "आमने-सामने" बात की थी, और तब तक उसके चेहरे पर कभी चमक नहीं आई थी। इस बार क्या बदल गया था? गौर कीजिए कि यह बदलाव लंबे समय तक बना रहा। (निर्गमन 34:34-35)।
- अब मूसा परमेश्वर को और भी बेहतर तरीके से जान गया था। उसकी मित्रता परिपक्व हो चुकी थी। उसने परमेश्वर की महिमा पर मनन किया था, और उस महिमा से उसका परिवर्तन हुआ था।
- इस घटना को दोहराते हुए, पौलुस हमें मूसा का अनुकरण करने और परमेश्वर की महिमा पर मनन करने के लिए आमंत्रित करता है ताकि हम भी उसके समान परिवर्तित हो सकें (2 कुरिंथियों 3:12-18)।
- मूसा एक आदर्श है जो दर्शाता है कि परमेश्वर हमारे लिए क्या कर सकता है जब हम उसे अपने चरित्र को बदलने और हमें उसकी दिव्य छवि में ढालने की अनुमति देते हैं।